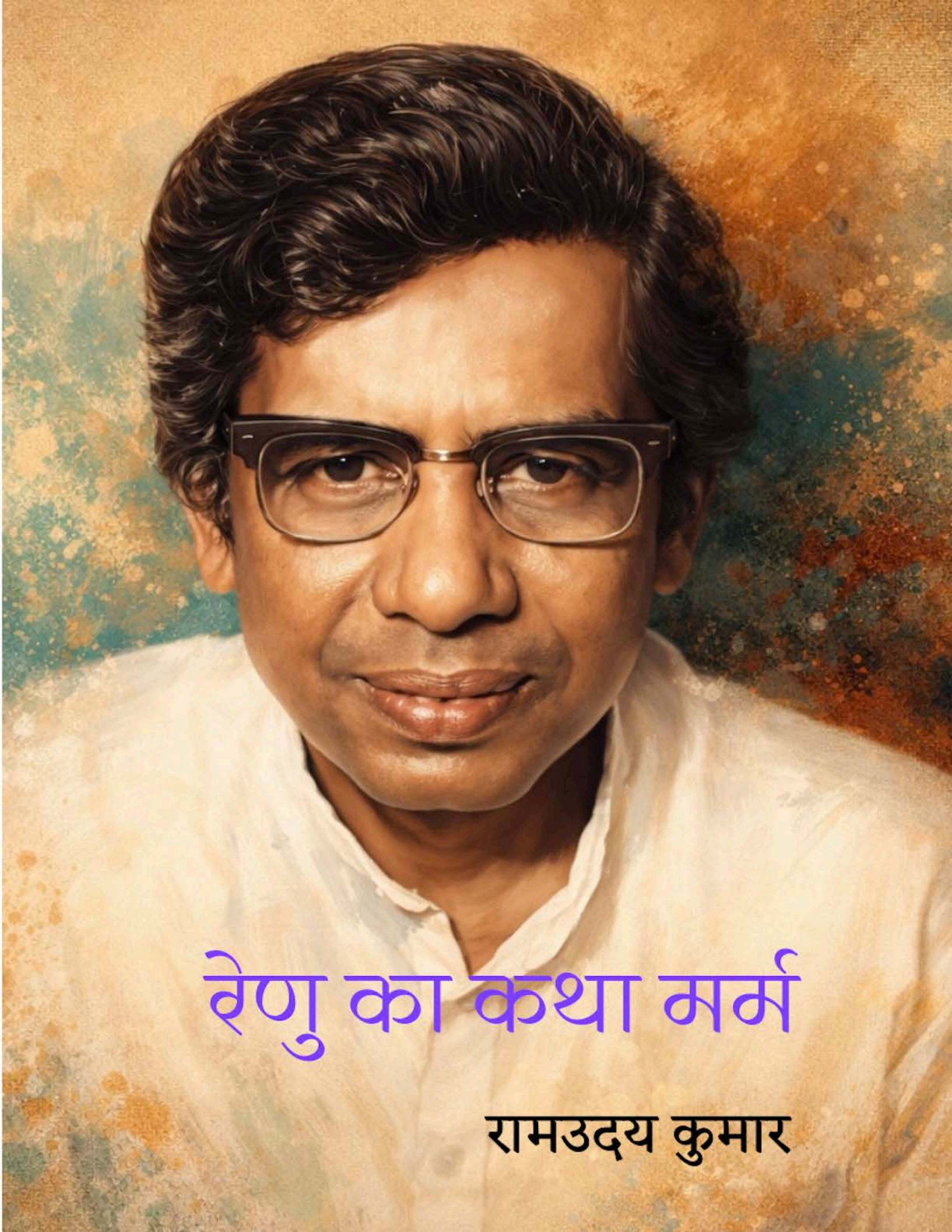

रेणु का कथा मर्म

रामउदय कुमार

रेणु का कथा मर्म

रामउदय कुमार

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: फरवरी, 2026

© रामउदय कुमार

समर्पण

पुण्यस्मरणीय, श्रद्धेय गुरुवर

डॉ. सुरेन्द्र चौधरी को

सादर,

सप्रेम समर्पित

अनुक्रम

प्राक्कथन	4
रेणु का अंचल और राष्ट्र	8
रेणु के रचना- द्वन्द्व	33
रेणु का कथासाहित्य एवं राष्ट्रोन्मुख अंचल	58
राजनीतिक समीकरण : नया संघटन	81
आंचलिक परिवेश, परिस्थिति तथा चरित्र	112
रेणु की रचनात्मक चेतना का सार : प्रेमचंद का विस्तार	133
हिन्दी और बंगला के आंचलिक उपन्यास : तुलनात्मक संदर्भ	154
निष्कर्ष	190
संदर्भ-सूची	199

प्राक्कथन

यह प्रबंध श्री फणीश्वरनाथ रेणु के कथा साहित्य की समकालीनता व प्रासंगिकता को समझने की एक छोटी-सी कोशिश है। आज बिहार का ग्रामीण जीवन जिस उग्र जातीय हिंसा के दौर से गुजर रहा है, उसमें रेणु के आंचलिक कथा प्रयत्नों को समझने की यह कोशिश बेज़ा नहीं है। मैंने जो कुछ इस क्रम में समझा है, वह थोड़े से शब्दों में यह है कि राष्ट्रीय आंदोलन के अंतिम दौर और स्वतंत्रता के उपरांत हमारी राजनीति जिस प्रकार आम आदमी से कटकर निहित स्वार्थी की गुटबाजी और सत्ता प्राप्ति के खेल में उत्तरोत्तर उलझती गई, उसी का परिणाम है कि देश के विभिन्न अंचल आज उग्रवाद के साये में जीने को विवश हैं। अंचल और राष्ट्र की अंतक्रिया का सार्थक पहलू यह होता कि दोनों एक-दूसरे के पूरक होकर बढ़ते। अंचलों की, अधिसंख्यक गरीब ग्रामीण जनता की जो उपेक्षा हुई उससे राष्ट्रीय विकास असंतुलित हो गया और हमारी स्वतंत्रता अधूरी सी होकर रह गई। विकास के नाम पर मध्यवर्ग और उच्चवर्ग ही आगे बढ़ सके, निम्नवर्ग की स्थिति बहुत नहीं बदली बल्कि सापेक्षिक तौर पर यह बिगड़ी। रेणु ने भारतीय राजनीति के अंतर्विरोधों के ज़रिए इसे सामने रखा है। साथ वे आम आदमी के अपने अंतर्विरोधों और उसकी परम्परागत जड़ मान्यताओं को भी उभारते है, जो उसकी इन स्थितियों के लिए जिम्मेदार है।

इस प्रबंध का पहला अध्याय आंचलिकता भाषिक-सांस्कृतिक अंतर्विरोधों पर है। राष्ट्रीयता के सापेक्ष आंचलिकता की क्षेत्रीयता और भाषाई अलगाववाद के रूप में जिस संकीर्णता के घेरे में बाँधकर आलोचकों ने देखा है, उन आक्षेपों को यहाँ संकेतित किया गया

है। वस्तुतः आंचलिकता राष्ट्रीयता का पूरक है और रेणु की भाषा को हम हिन्दी को समृद्ध करने वाली भाषा के रूप में देखते हैं मिथिलांचल के आंदोलन के स्वरूप एवं चरित्र के संदर्भ में रेणु की जनपक्षीय रचनात्मक दृष्टि को इस अध्याय में विवेचित किया गया है। इसके अतिरिक्त मिथिलांचल के इतिहास की संक्षिप्त चर्चा के क्रम में उसकी विशिष्ट स्थिति एवं उसके परिणामों को सामने रखा गया है।

दूसरा अध्याय रेणु के व्यक्तित्त्व के विकास, रचनात्मक चेतना की मूल भूमि को सामने लाता है। इसमें रेणु के रचनाकार व्यक्तित्त्व के अंतर्विरोधों एवं उनकी साहित्यिक परिणतियों का जिक्र हुआ है और रेणु के रचनात्मक द्वन्द्वों का उनके कथा-साहित्य के स्वरूप पर प्रभाव को विवेचित किया गया है। यह दिखाया गया है कि रेणु का मध्यवर्गीय सुविधावादी एवं आदर्शवादी भावुक व्यक्तित्त्व उनकी रचनात्मक जनपक्षीयता के द्वन्द्व में अपनी पक्षधरता को ही प्रकट करता है । वस्तुतः दो अध्याय आगे के अध्यायों के लिए पृष्ठभूमि के तौर पर भी देखे जा सकते हैं।

तीसरा और चौथा अध्याय रेणु के कथांचल में आती आधुनिक हलचलों और उनके प्रभावों को विवेचित करता है । राष्ट्रीय आंदोलन एवं विभिन्न राजनीतिक दल, विज्ञान, भूमि-कानून आदि की भूमिकाओं और इनके बीच हजारों वर्षों की जकड़न को ढीला करते हुए अंचल की प्रतिक्रिया एवं उसकी दिशाओं को सामने रखने का प्रयत्न इनमें हुआ है । भारतीय राजनीतिक दलों के सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलुओं की चर्चा के साथ नई आशाओं-आकांक्षाओं के साथ उठे आम आदमी का इनके बीच उत्साह और कुंठाएँ तथा भविष्य की संभावनाओं पर इनमें चर्चा हुई है।

पाँचवाँ अध्याय रेणु के कथाचरित्रों को लेकर है। यहां कुछ मुख्य चरित्र ही लिए गए हैं जिनके ज़रिए रेणु की चरित्र प्रणाली को समझने की कोशिश हुई है। बेशक इसके पीछे अंचल के परिवेश, उसकी टूटती जड़ता में प्रतिक्रिया करते लोगों की प्रामाणिकता और दिशा का अध्ययन किया गया है।

छठा अध्याय प्रेमचंद की रचनात्मक चेतना की परंपरा में रेणु की रचनात्मकता को रखकर देखने का प्रयास है। ग्राम कथा प्रेमचंद के बाद पहली बार रेणु के ज़रिए ही प्रतिष्ठित हो सकी है; उसके पीछे समकालीनता से मुठभेड़ के स्तर पर रेणु का प्रेमचंद की संवेदना को दिया गया विस्तार ही था। 'गोदान' के अकेले किसान की त्रासदी राजनीति और अन्यान्य क्षेत्रों में प्रभुवर्ग के हावी होने के कारण थी जिसे उसके समूचेपन के साथ स्वतंत्रता के आसपास जिस शिद्दत से रेणु ने अपने कथा प्रयत्नों में सामने रखा वह दुर्लभ था। तत्कालीन राजनीति के अभिजन चरित्र से मोहभंग ही आंचलिकता के पीछे था जिसे हम प्रेमचंद के यहां से शुरू होकर रेणु में पूर्ण विकसित होता हुआ पाते हैं । ऐतिहासिक साक्ष्यों एवं साहित्यिक संदर्भों के ज़रिए प्रेमचंद और रेणु की तुलना के इन बिन्दुओं को इस अध्याय में व्याख्यायित किया गया है।

सातवाँ अध्याय बंगला - हिन्दी आंचलिक कथा साहित्य की तुलना पर केन्द्रित है। मूलतः यह अध्याय रेणु और भादुड़ी जी को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। ताराशंकर के रूप में पूर्व की ग्राम कथा परंपरा के एक बंगला प्रतिनिधि एवं हिन्दी में नागार्जुन तथा अन्य समयुगीन आंचलिक कथाप्रयत्नों के बीच रेणु की स्थिति को समझने की यहां कोशिश हुई है। इसमें जो बात उभरकर आई है, वह यह कि इस पूरी धारा में रेणु और भादुड़ीजी अपने